राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी

एवं

हिंदी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय

जयपुर

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

ब्रजभाषा साहित्य, समाज और संस्कृति

10—11 अगस्त, 2018

संयोजक

डॉ. विनोद शर्मा

अध्यक्ष, हिंदी विभाग

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

मो. 9950997599

आयोजन सचिव

डॉ. दीपिका विजयवर्गीय

सह—आचार्य, हिंदी विभाग

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

मो. 9414788414

आयोजक

हिंदी विभाग

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर—302004

फोन : 0141—2256528

ब्रजभाषा साहित्य, समाज और संस्कृति

ब्रजभाषा भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन एवं विभिन्न ऐतिहासिक प्रवर्तनों की संवाहिका के रूप में देश की राष्ट्रीयता, अखंडता एवं सामाजिक चेतना की सूत्रधारिणी रही है। साथ ही देश की समस्त विविधताओं को एक सूत्र में पिरोकर समन्वय साधने का उत्कृष्ट कार्य किया है। भाषा विचारों के आदान–प्रदान का माध्यम होने के साथ–साथ समाज और संस्कृति की संवाहिका होती है। किसी भी भाषा का सम्बन्ध समाज से इतर नहीं है। भाषा आभ्यंतर अभिव्यक्ति का विश्वसनीय माध्यम है। वह हमारे आभ्यंतर के निर्माण, विकास, अस्मिता एवं सामाजिक–सांस्कृतिक पहचान का भी साधन है। भाषा के बिना मनुष्य सर्वथा अपूर्ण है और अपने इतिहास तथा परंपरा से विच्छिन्न है। भाषाई–संकट के दौर में लोक भाषा, जन भाषा व साहित्य भाषा को लेकर पुनःचिन्तन करने की आवश्यकता है। सोशल मीडिया जहाँ अभिव्यक्ति का प्रमुख माध्यम बन चुका है, वहाँ भाषाई चर्चा किसी भी समाज के लिए उन्नत संकेत है। ब्रजभाषा साहित्य का प्राचीन इतिहास रहा है। इसी से हिंदी साहित्य समृद्ध है। ब्रजभाषा साहित्य की चर्चा समाज और संस्कृति के लिए परम आवश्यक है। केवल ब्रजभाषा साहित्य ही नहीं बल्कि समस्त भारतीय लोक–भाषा साहित्य को पुनः विमर्श पटल पर रखना प्रत्येक साहित्य प्रेमी का कर्तव्य है। साधारणतः ब्रजभाषा काव्य को लेकर एक आम धारणा है कि यह केवल शृंगार और वात्सल्य रस की भाषा है, जबकि आधुनिक ब्रजभाषा काव्य में प्रतिबिंबित समाज बहुआयामी है।

कृष्ण भक्ति काव्य की एकमात्र भाषा, जिसमें सूरदास के साथ समस्त अष्टछाप के कवि लगभग सारा रीतिकाल जिसमें चिंतामणि, पद्माकर, देव, सेनापति, बिहारी, घनानंद, आलम, बोधा, ठाकुर आदि इसमें समाहित हैं। साहित्यिक महत्त्व के कारण ही इसे ब्रजबोली नहीं ब्रजभाषा की संज्ञा दी जाती है। मध्यकाल में इस भाषा ने अखिल भारतीय विस्तार पाया। बंगाल में इस भाषा से बनी भाषा का नाम 'ब्रज बुलि' पड़ा। आधुनिक काल तक इस भाषा में साहित्य सृजन होता रहा लेकिन परिस्थितियाँ ऐसी बनी कि ब्रजभाषा का स्थान धीरे–धीरे खड़ी बोली ने ले लिया।

खड़ी बोली में रचित प्रगतिवादी कविता में यथार्थवादी चिंतन बहुत बाद में आया जबकि ब्रजभाषा कविता में इसे भारतेंदु युग में देखा जा सकता है। भारतेंदु युगीन कवियों ने महँगाई, अकाल, टैक्स और धन का विदेश प्रवाह, जाति–भेद, विदेशी वेश–भूषा, बाल विवाह, राजनीतिक क्षेत्र में पराधीनता आदि तमाम विषयों को अपनी कविता में चित्रित किया है।

भारतेंदु युग के पश्चात पंडित श्रीधर पाठक, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', सत्यनारायण कविरत्न, वियोगी हरि, दुलारेलाल भार्गव, उमाशंकर वाजपेयी 'उमेश' की कविताओं में सामाजिक समस्याओं को मुखरता से अभिव्यक्त किया गया है। जीवन और जगत की व्यापक अनुभूति पाठक के मन को प्रभावित करती है–"छन–छन छीजत न देखहिं समाज–तन, हेरहिं न विधवा छटूक होत छतियां, जाति को पतन अवलोकहिं न आकुल ह्वै, भूलि न विलोकहिं कलंकी होत कुल मान।" (हरिऔध)

भाषा किसी की मुँहताज नहीं होती। ब्रजभाषा में इतनी सामर्थ्य है कि किसी भी ज्वलंत विषय को साहित्य में अभिव्यक्त किया जा सकता है। ब्रजभाषा काव्य का अध्ययन करने पर यह प्रतीत होता है कि इसमें समाज केन्द्रित कविताओं की बहुलता है। इससे पता चलता है कि ब्रजभाषा के कवि समय के प्रति कितने जागरूक हैं और वे अपनी रचनाओं में समसामयिकता का पूर्ण प्रतिबिम्ब चित्रित करते हैं।

प्रस्तावित विषय

- ब्रजभाषा, साहित्य वर्तमान परिदृश्य
- ब्रज साहित्य और समाज
- ब्रज साहित्य में लोक–संस्कृति
- कृष्णकाव्य परम्परा और कवि (सूर, रसखान, मीरा एवं अन्य कृष्ण भक्त कवि)
- रामभक्त कवि और ब्रजभाषा काव्य
- ब्रज साहित्य में नारी–चित्रण / चेतना
- ब्रज साहित्य एवं संस्कृति में लोकमंगल की कामना
- ब्रज साहित्य में सामाजिक समरसता
- ब्रजभाषा साहित्य की प्रासंगिकता
- ब्रजभाषा लोक साहित्य
- अष्टछाप के कवि एवं काव्य
- आधुनिक काल में ब्रजभाषा काव्य एवं कवि
- ब्रजभाषा काव्य में रस छंद अलंकार
- ब्रजभाषा साहित्य में सौंदर्यबोध
- ब्रजभाषा काव्य में प्रकृति चिंतन
- ब्रजभाषा काव्य में वात्सल्य वर्णन
- ब्रजभाषा काव्य का भाषिक वैशिष्ट्य
- ब्रजभाषा काव्य में एकात्मवाद
- ब्रजभाषा काव्य में समन्वय साधना
- ब्रजभाषा काव्य का शैलीवैज्ञानिक अध्ययन
- ब्रजभाषा कवियों का दार्शनिक चिंतन
- ब्रजभाषा साहित्य का राजनैतिक परिदृश्य
- ब्रजभाषा साहित्य की सामाजिक चेतना
- ब्रजभाषा साहित्य की धार्मिक पृष्ठभूमि
- ब्रजभाषा साहित्य की आध्यात्मिक पृष्ठभूमि

ब्रजभाषा साहित्य, समाज और संस्कृति

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

(10 – 11 अगस्त, 2018)

श्रीमान् / श्रीमती _____

_____

_____

प्रेषक :

डॉ. विनोद शर्मा

विभागाध्यक्ष (हिंदी विभाग)

एवं

संयोजक, राष्ट्रीय संगोष्ठी

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर–302004

मो. 9950997599

ई–मेल : vinoddr68@gmail.com

पंजीयन प्रपत्र

नाम.....

पद.....

संस्था.....

.....

शोधपत्र का शीर्षक.....

.....

पंजीयन शुल्क

शिक्षक	–	रूपये 1000
शोधार्थी	–	रूपये 700
अन्य छात्र	–	रूपये 400

नोट : प्रतिभागी अपने ठहरने की व्यवस्था स्वयं करें।

आयोजन समिति

श्रीमान् कुलदीप रांका (I.A.S.),
प्रमुख शासन सचिव कला, संस्कृति, पर्यटन, साहित्य एवं
अध्यक्ष, राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी, जयपुर

डॉ. श्रुति शर्मा
डॉ. करतार सिह
डॉ. जितेन्द्र कुमार सिंह
डॉ. वीरेन्द्र सिंह
डॉ. रेणु व्यास
डॉ. जगदीश गिरी
डॉ. विशाल विक्रम सिंह
अनिता रानी
सुंदरम शांडिल्य
दीप कुमार मित्तल

डॉ. उर्वशी शर्मा
डॉ. मीता शर्मा
डॉ. मंदाकिनी मीना
डॉ. अर्जुन सिंह
डॉ. गीता सामौर
डॉ. कैलाश पंवार
डॉ. तारावती मीना
वर्षा वर्मा
प्रियंका कुमारी गर्ग